









श्रीः
गुरुगण

शायनम॥ ह्री

पांछामयायुक्तस्यंलि स्वाहु सांहु या होय धो
तिहिले नोतस्ते क्लिष्टकायन नोसिध नि
लवकयाध आसनाद पावेन शुद्धयेन
म धकं जने हा हायाय समुक्त
तुय आचमनकायगु मंत्र ॥ ह्रीं आत
मनत्वाय स्वाहा ॥ ह्रीं विजातत्वाय स्वा
हा ॥ ह्रीं शिवतत्वाय स्वाहा ॥ श्रीगुरुनमः

कार्याय डोम

मंत्रमहानं

॥ ७ ॥

१

श्रीः
गुरुभ्यो

नमः सर्वे ॥ श्री

पद्मगुरुभ्योनमः सर्वं ॥ श्रीयजेस्त्र्यो गुरुभ्योनमः द
धुं ॥ नमस्कृत्याय ॥ पतिं मुयकाव स्वास्त
स्वचा उयक गु मंत्र ॥ ह्रीं ह्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं
॥ वसपचिने स्वकदाय मंत्र ॥ हुं
हुं हुं ॥ बालाहास नियचिने दाध ॥
फुन फुन ॥ प्राणादिन्यास ॥ ह्रीं ला पचिने
ह्रीं से धिका धायगु ॥ जं जं जं ३२ ॥ ह्रीं ला पचिने

अंगुयाचिने हा

से धिका

धाव

गु॥

॥ ११ ॥

॥ ह्रीं नमो भगवते ॥

नमो भगवते ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ वेववे

॥ ११ ॥ करेगा देव्याम ॥ जवला हा घवला

हादये गु ॥ ह्रीं हस्ताय फ न ॥ ह्रीं अगु

ह्रीं नमो भगवते ॥ ह्रीं तर्जनी भ्यां नमः ॥ ह्रीं

मध्यमा भ्यां नमः ॥ ह्रीं अनामिका भ्यां नमः ॥

ह्रीं कनिष्ठा भ्यां नमः ॥ ह्रीं करतल प्रोक्ता भ्यां नमः

॥ ह्रीं हृदयाय नमः ॥ ह्रीं हृदयाय नमः ॥ ह्रीं सिर

सेखा हा ॥ ह्रीं

सिखाय

वो

फुल

॥ ह्रीं कुवचा

॥ ह्रीं नेत्रत्र

याय वीकत ॥ ह्रीं अस्त्राय फ न ॥ धूलि न्याम धु

सोम ॥ विभुति आनूयाय ॥ उन्मो शिवाय

भाय ॥ विभुतकाये देया लाहाया दुला म

तय ॥ अघनयन वरु नमः ॥ प्राप्ते

न कोन ए वो य ॥ मुद्रान त्व पु य ॥ म

न ह्रीं हिं भिं ह्रीं ह्रीं ॥ अग्नी गिति भ स्म ॥

जलमो न भ स्म ॥ स्थलमिति भ स्म ॥ वायु राना

भ स्म ॥ वायोर

विभुस्य

ह्रीं



लाहा
 सिला नु
 ना त्वने ॥ जय
 ॥ ह ९ श्री स्वाहा १० ॥ म ९ श्री स्वाहा १० ॥ उ न मो
 शिवाहा स्वाहा १० ॥ जय संसु रा ॥ गुह्या
 दि गुह्य गोप्यत्वं गृहा राग स्मृत् कृतं
 जय ॥ शिद्धिर्न चतु मे देवी न्यत्यु
 मादात् त्वयि स्मृतं ॥ जय गृहा राग स्वा
 हा धकं त्वने ॥ स्वाहा शिव शिव करं सांत
 शिवात्मानं शिवो नमः ॥ शिव मार्ग प्रणिता ॥ प्र
 णामाभि शदा
 शिवं ॥
 ११०

पा
 पो हं पा
 प कर्मा हं पा
 पात्मां पाप संभव ॥ आदि मां देव देवेति सर्व पा
 प हरो हर ॥ अनेत्र सर सां नास्ती त्वमेव सर
 सां नमः ॥ तस्मात् का कृत्य भावेन रक्ष
 रक्ष परमेश्वर ॥ शुनि श्राव वा ने
 डंड वृत्त याये ॥ सुव वा अ ॥ संहार सु
 शोकेन ॥ लो २ ह्यं २ भिं हीं ह्यं ह्यं अस्मा
 य फुट ॥ नामि य या लिका य ॥ ~~शिव शिव शिव~~
~~शिव शिव शिव~~
 १

श्री
माहादेव
पुजापात्रगु॥

श्रीगणेशायनमः॥ भद्रश्रीमाहादेवपुजावि
धारा॥ निगार्कशावाय॥ सत्मादेवैयमं
द॥ अर्घ्यावायमंद॥ किं गनशा
सत्माहं स स्थायनायाययिदेव
श्रीसुर्योपनिषायाशाश्रीमाहादेवा॥ भ्र
सहदेवयातकिंगपुषा॥ पञ्चोक्तेयागदेव
नेवालेनया॥ आवहनस्वायकचंदनाक्षतपुष

येनयवक
पुजाया
त
य

आम
अयाय
श्रीगुरुभररा

याय॥ रं हिं विं लो॥ अयंडमंदनाकरं व्या
प्रयनचराचरं॥ तत्त्वदं दर्शितं येन तस्मिं श्री
गुरुभ्येनमः न्याययाय॥ अर्घ्यावायपुजा
याय॥ जलपात्राभयनायनमः॥ गंगेयज
मुनेभैव गोदावरिसरस्वति॥ नमंदेसिन्धु
कावेरिजनेष्मीरुसेनिधिमुकुरु॥ वीनात्र
जलतमहृदं अर्घ्यावायभहारकायपाडकां

॥ हृदयादि
पुजाया
य



स्वाहा
जपे॥

ह्रीं हौं स स्वाहा

१०॥ जपे गृहारा स्वाहा धकं वलिं मंतय ॥ स्त्रोत्रं ध्याय

॥ शिव शिव करं सात नमू शिवात्मा नमू शिवोत्तम

म ॥ शिव मार्गे प्रनितारं प्रसा मा मिसूदा शि

व ॥ १ ॥ मुखवाज ॥ लि गार्चणा विधे न

त्सर्व विधि परि पूरा नम सुधकं कि गू अ

र्च या जल कया सला हि चार्तु इका न्व नु ॥ न्या

सलिकाय ॥ लि गार्चनी विधे स्व स्थान वासो भव

तु धकं उजाया

या ॥ चिस्वा

कया

मिषा

यिया मिरि दु

य ॥ लि गार्च न

बाला ननु ना संचा वारा सं होय ॥ इति माहादेव

पुजा विधि जुन भुन ॥ श्री ३ माहा पुन देव या

पुजा याय श्री गणेशाय नम ॥ इति क भल दे

य ॥ आ नम्ये याय ॥ गुरु न्या म संहिते

याय ॥ जल पा न पुजा न्या या या अथे याय

धुने व ॥ फ ॥ धकं अर्घ पा वं हाय ॥ पुजा मे न

॥ मे वी हि मंद हाय द भक ला न्म ने नम ॥ चिस्वा न

य आ पा हन

स्वा य व

चंद

नाक्ष
नपुष्पं नम
सुधीमनीना

प्रायतः॥ धर्कं भजनय नवधर्मा मंत्र॥ प्रे ह्याड
संडरसं वृत्तरसवत् रसन्वीतः॥ आपुरितं
माहापात्रं पियूषरसमूपाह॥ १॥ प्रजा॥
स्वोमवाहं मंदलाय वादकलात्म
नेनमः॥ नमः सर्वपाथिक देव्यो नमः॥
नमः एकवाले सर्वपाथिक देव्यो नमः॥ व.
जीकया पात्रसेधुना वाल हायात्पते॥ पात्रमः॥

ह्रीं नोया ह्रीं
नमः धर्कं
क

स्वय
पुत्रामंत्र
वीवाम देवाय

॥ वीवाम देवाय वीफदः॥ यमुपतयनमः॥ पमुपतय
इत्याय फदः॥ अलिपना जुलः॥ मछमुदुन
त्यपुया॥ वृत्तग्राप मोचन मंत्र॥ ह्रीं ह्रीं
वीं वीं वुं वीं वीं वीं॥ वृत्तग्राप मोच
यमोचय अमृत ग्रापय स्वाहा॥ इति व्री
हृषा ग्राप मोचनी॥ कल ग्राप मोचन मंत्र
कौं किं कुं कौं कौं कौं॥ कल ग्राप मोचय मोचय

अमृतं ग्रापय
स्वाहा॥ इति
कल

आप

मोचनो॥

शुक्र आप मो

चनमेन॥ श्री श्री शुभ्र श्री श्री॥ उद्गा शुक्र आप मोच

य मोचय अ न नं आप पय स्वाहा॥ श्री शुक्र श्री

प मोचनी॥ धुलिमद मुद्रा त्वयु या भायगु

॥ हने पुना॥ हि नम धनु मुद्रा दर्शय

नम॥ हि विप्रान त्वा य स्वाहा यानि मु

द्रां दर्शय नम॥ जये॥ ह९ मू॥ स्वाहा १०॥ म

९ जी॥ स्वाहा १०॥ पात्र सो जा सं बाल या मेन॥ अ

मृत मुद्रा न की

गजोलात

को

२

न

भागं शु

सुं पुं सुं लं

नम॥ धाये धुलिमद जुल॥ हने मंदे मुद्रा त्व पु

बा॥ सै॥ हि॥ श्री॥ इंद॥ दे॥ वि॥ नं॥ कु॥ ह॥ हि॥ इ॥

कुं॥ र॥ ठ॥ ठ॥ स्वाहा॥ यानि मुद्रा दर्शय॥

नम॥ श्री नाथाय॥ नम॥ श्री सिद्धि नाथा

य॥ नम॥ श्री कुज म नाथाय॥ कं देव त न

धमं नित्य॥ इति पात्र सोला स्त्र धानि पुजा विधि

जुल॥ धनं लि श्री॥ स्व॥ ह॥ दे॥ व॥ ता॥ आ॥ न॥ या॥ न॥ के॥ अ

घा॥ हो॥ ना॥ म॥ ला॥

हि॥ म॥ श्री॥

३५

रश्मि
इह देव
ता देव्यो ह्यो

न नमः॥ वज्रिकया पावसधुना देवयार्के हायगु
श्री ३ भस्व इह देवता देव्यो अनिछानं
नमः॥ धर्म वार्त संतय॥ श्री ३ भस्व इह
इह देवता देव्यो चंदन नमः॥ सिं
धुरनमः॥ अक्षत नमः॥ पुष्प नमः॥ धूल
श्री ३ भस्व इह देवता छान विधजुलः
अथ श्री देवार्चन पुजायाय नमः॥ आर्चय्या
व कि गलव

जोने श्री
मुने
१०

साहि
वाया॥ मंत्र
अज अस्मत्तनि

व कर्म देवार्चन पुनीमयर्थी ह्रीं ह्रीं श्री कुल मार्के
नद और वाव धामि नायनमः॥ अर्चनमः॥ आवाहन
स्थावक नंदनाक्षत पुष्प नमः॥ अथ श्री गुरु
मंडना चामु चिस्वा दे पा लासति
जोने॥ मंत्र ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं॥ अरवे द
मंदलाकारं व्याप्य येन चराचरं॥ तत्कर्म द
स्ति न येन तस्मै श्री गुरु नमः॥ १॥ श्री गुरु पाड

का पुनसा मिन
म॥ धर्म
साहि

संत
या स्वां पु
जा मंत्र पञ्चा

सनाय पाडुकां॥ सभासनाय पाडुको नमः॥ धकं
सलाह सपुजा याय॥ पात्र पुजा॥ पत्रासना
य पाडुका॥ कर्मासनाय पाडुको नमः
धकं थय भासन संपुजा॥ निवे ला
हाया दधुयाचं ह्याला पाचनं कि गजा
ना जवं वनं होला छोय गुमंत्र॥ किनी का
वि विचे को के ना हें हें अस्त्राय फुट॥ वज्र पुझा न

कि गकया धा

य मंत्र रे

डंक

५९

न व
अ पंजरे

स्वाहा धकं पात्र

मोलासंथु ना धाय ३॥ वलिसंथय॥ पात्र मोलास
पाचिंथुना भिवांसं पिय॥ नौदार वंधन भा या य
न धाय गु॥ मंत्र रे चरम कुले कर्म बने हों
हैं हें कर्म स्वाहा॥ श्रीगुरु नमस्कारादि
वास सहित याय॥ संघ पुजा अर्घ्य पुजा
याय गुहा याया ध्ये आधा हन स्मित याय॥ संघ
संघ पुझा दर्शय केने॥ अर्घ्य संधे पुझा दर्शय केने

सलाह सदे

व या के न

ने

92

वारा

संतवने

वप्रतिपद

सैंआत्मनेबंदन

पाडकां॥ ह्रींजितलंपाडकां॥ श्रींविभक्तमिंधुर

पाडकां॥ ह्रींमर्वजनमोहिनिपाडकां॥ ह्रींआ

त्मनपुष्पपाडकां॥ पावयालधनध्व

केहायेगुमंरहसौपाडकां॥ ध्वक

हाहाजायनिये॥ संवयाजलाकेगक

यावनिहायेकावधायमं॥ श्रीगुरुभारम

अथश्रीगुरुमंडलार्चनावीन॥ श्रीसंवर्तोमंदलाज

कमपदसहि

नानदस

की

१३

शुविमा

॥ श्रींन्या

यचनुस्कंअकु

लकुलगतपंचकंचाराणरुचि॥ चत्वारोपंच

कोनेप्राणीचनुरनत्वतोमंदलेन॥ संव

हज्यनतमेनमनिगुरुवरंभैरवंश्री

कुनेसी॥ श्री३भरश्चरुस्तदेवतादे

वोभ्योइदेआवाह॥ इव्येआवाह्याधाय

सलाहिवाडयकाप्रवालिसंतय॥ निपालाहा

तिनंसलाहिधियाभायमंज॥ ह९भू॥ स९वी॥ श्री३

अस्वश्चरुस्तदेवता

देवोनवात्माग

रुमराड

लभहा

रकायस्था

पयामिनमधकं

अनियाय॥ श्री ३ श्वर स्वइह देवता देव्ये इहागच्छ ॥
इहातिष्ठ २॥ इहसौ नधिं कुम्भ ॥ अस्मादिहानं कु
म्भ ॥ कुम्भममपुजां गृहान्वाहाकद ॥ जेन
मुद्रादर्लया ॥ योनिमुद्रादर्लया ॥ देव
आनयाचके ॥ संवअर्घी जेना श्री ३ श्व
र स्वइह देवता देव्यो ॥ पात्रेभा ॥ संवजलं लुप ॥
अर्घनम ॥ आनसंव नम ॥ भुद्रोदक आनअर्घनम ॥ आ
चमने संव नम ॥

पुन आचम

निय

१४

अर्घ

नम ॥ श्री ३ श्व

र स्वइह देवता देव्ये

न्यो अलिहानं नम ॥ धकं वृजिक या पात्रमथुना दे
वयानकाया वलिमत्यत ॥ धुलि देव आनजु
ल ॥ श्री ३ श्वर स्वइह देवता देव्ये श्री सं
ड चंदन नम ॥ सिधु नम ॥ अक्षत न
म ॥ पुष्प नम ॥ श्री श्री श्री श्री श्री मयुरम
नाथ पाडकां ॥ नरा मनाथ पाडकां ॥ सवासनाथ
पाडकां ॥ प्रेता मनाथ पाडकां ॥ सुसा मनाथ पाडकां ॥

तत्पंचवलि

पुजाविधि

१५

वड
क नाथाय
पाडकां ३॥ पुन

यामिनम ॥ इंद वलिंग ॥ ह २ स्वाहा ॥ क्षौ क्षेत्र पानाय
पाडकां ३ पुन यामिनम ॥ इंद वलिंग ॥ ह २ स्वा
हा ॥ जीजागनि ॥ यो पाडकां ३ पुन यामि
नम ॥ इंद वलिंग ॥ ह २ स्वाहा ॥ नौ चा
मुगाज य पाडकां ३ पुन यामिनम ॥ इंद व
लिंग ॥ ह २ स्वाहा ॥ श्री कुम गरो भराय पाड
कां ३ पुन यामिनम ॥ इंद वलिंग ॥ ह २ स्वाहा ॥ आ

वाहन स्थापन
चंदना
हो
१५

न पुष्य
नम ॥ मुद्राया
नाडे डधन त्या वग

डे डधन जनि २ विंद ३ योनि ४ गज मुद्रा दर्शन
म ५ ॥ विंडा ॥ नम श्री नाथाय नम श्री सिद्धि नाथा
य नम श्री कु नम नाथाय नम ॥ शनिये च व
जि पुजा जुला ॥ श्री श्री देव पुजा विवि
आत्मानि पुजा ॥ नरासनाय पाडकां ॥ क्षौ
क्षेत्र पानाय पाडकां ३ ॥ पुन यामिनम ॥ इंद व
लिंग ॥ ह २ स्वाहा ॥ मयुरासनाय पाडकां ॥ वा वडक

नाथाय पाडकां
३ ॥ पुन या
मि

नमः॥

ईदंवलिंग

हृदस्वाहा॥ ॐ

मासनाय पाङ्कजं॥ श्रीकुल गणेशाय पाङ्कजं

३॥ पुनयादिनमः॥ ईदंवलिंग हृदस्वाहा॥ आ

वाहन स्थापन चंदनाक्षत पुष्पनमः॥ पुत्रो

ज्याता डंडवत् पायगु॥ डंडवत्तजनि

२ गजपुत्रांदस्य नमः॥ ३॥ विंदु नमः श्रीना

थाय नमः श्रीशिखिनाथाय नमः श्रीकुजसना

थाय नमः॥ शक्तिप्रदेव पुजा जुन ॥ श्रीशिवदेव

तार्जनम्॥ आ

सनपुजा

श्री

५६

पद्मास

नाथपाङ्कजं

सन्नासनाय पाङ्क

जं नमः॥ ध्यान॥ त्रिस्थां किं गदे पांलाहतिं जो न्दे॥

ध्यान धाय॥ सर्वो वारि स्थीने देवं दसवक्त श्री

लोचनं॥ अष्टादश भुजं देव ध्याय देव

नवात्मकं॥ ध्यान पुष्पनमः॥ इति ध्या

न॥ पुजा धाय॥ ह्रीं श्री आनंद शक्ति भैर

वानंद विराधिप सुतय सुत श्रीनवात्मगुरु

मंदलभहार काय श्री पाङ्कजं॥ ३॥ पुनयादि

नमः॥ ईदं व

लिंग

हृद

स्वाहा

आवा

हनस्थापन

चंदनाक्षनपु

ख्यं नमः श्रीमूलमुद्रा ॥ योनिमुद्रादस्य ॥ विंदु

नमः श्रीनाथाय नमः श्रीशिदिनाथाय नमः श्री

कुंजनाथाय नमः ॥ शनिश्रीमूनदेवता

पुनारुन ॥ अथ श्रीकर्मदेवतापुजा

॥ आसनपुजा ॥ वृषासनाय पाडका ॥ सिंघा

सनाय पाडका ॥ ह्रीं श्रीमानंदशक्तिनेखा

नंदविशेषितय ॥ ह्रीं श्रीमहाविंशतिक

स्त्रीं श्रीमहाविंशतिक

रको ॥

पाडका

॥

३५

जयामिन

मः ॥ ईदवालेग

हृ २ स्वाहा ॥ आवाहनस्थापनचंदनाक्षनपुख्यं न

मः ॥ योनिमुद्रादस्य ॥ विंदु नमः श्रीनाथाय नमः

श्रीशिदिनाथाय नमः श्रीकुंजनाथाय

नमः ॥ शनिश्रीमहाविंशतिकविंशपु

जा ॥ श्रीभगवति ॥ उर्गाय पुजा ॥ आसनपु

जा ॥ वृषासनाय पाडका ॥ सिंघासनाय पाड

का ॥ ह्रीं श्रीशिदिनाथाय पाडका ॥ पुज

यामिनमः ॥ ईद

वालेग

स्वा

१८

यसि

नमः॥

इंदु वलिंग

स्वाहा॥ आ

वाहनस्थापनचंदनाक्षतपुष्पं नमः॥ योनिमुद्रां द
र्शनं नमः॥ विंदु नमः श्रीनाथाय नमः श्रीशिदि
नाथाय नमः श्रीकुजे सनाथाय नमः॥ इ
ति श्रीगणेशपूजा जुल॥ श्रीगुह्यका
लिका पुजा॥ आसनपूजा॥ सप्ताष्टि सप्त
द्रासनाय पादुकां॥ इंदु श्रीगुह्यकालिका
देव्य पादुकां॥ पुजयामि नमः इंदु वलिंग गृह

स्वाहा॥ आवा

हनस्थाप

नचं

दना

नाक्षतपु

स्वयं नमः॥ योनि

मुद्रां दर्शनं नमः॥ विंदु नमः श्रीनाथाय नमः श्रीशिदि
नाथाय नमः श्रीकुजे सनाथाय नमः॥ शनि श्रीगु
ह्यकालिका पुजा॥ श्रीसुंदरी पुजा॥ आस
नपूजा॥ शक्रपूजा सनाय पादुकां॥ पं
चवक्त्रासनाय पादुकां॥ ऐं ह्रीं सौं श्रीधामा
निष्ठ सुंदरी देव्य पादुकां॥ पुजयामि नमः॥ इंदु
वलिंग गृह २ स्वाहा॥ आवाहनस्थापनचंदनाक्षत

पुष्पं नमः॥ योनि

मुद्रां दर्शनं

नमः

म॥

विंदुनमः॥

श्रीनाथायनमः॥

श्रीशिदिनाथायनमः॥ श्रीकुनेमनाथायनमः॥ इति श्री
सुंदरीपुजा॥ श्रीनारापुजा॥ आसनपुजा॥ प्रेना
सनायपाडको॥ उद्दिष्टिंद्रं फलमश्रीअ
नारायणपाडकां॥ पुनयापिनमः॥ इंद
वलिगृह २ म्वाहा॥ आवाहनस्थायनच
दनाक्षनपुष्पनमः॥ योनिमुद्रांदर्शनमः॥ वि
डनमः॥ श्रीनाथायनमः॥ श्रीशिदिनाथायनमः॥ श्रीकुने

सनाथायनमः॥

इति श्री

नारा

२०

श्री
गणेशाय
नमः छानकर्म

ॐ नित्यं नयाय हिंसा नय श्रीं लुत्तु बोले त्रितया
स्वा नयाय काचिक वाचिक मानमहाद्रि ॐ
किं श्रीं नूं हों मिं स्वाहा स्वातसिले तु
निसिले आचमनयाये ॐ आत्मनत्वा
यस्वाहा हिं विजानत्वाय स्वाहा श्रीं सिधतन्वा
यस्वाहा आगंत गथिचिये रेकादसमनं वील

सतं दिगुशि
यैतधाक
श्री

उमाशु
ल॥ अधर्मानि
प्राप्तसर्वाननय

सिद्धास्यां कटि २ यानावीज श्रीं कटि द्वाय गुमं न
॥ वीं वदुक नाथाय ॥ इंदवलिंग गुरु २ स्वाहा ॥
॥ वीं क्षत्रपालाय ॥ इंदवलिंग गुरु २ स्वाहा ॥
॥ वीं जोगिनि श्रीं ॥ इंदवलिंग गुरु २ स्वा
हा ॥ वीं चामुण्डाय ॥ इंदवलिंग गुरु २ स्वा
हा ॥ वीं कुलगोमाय ॥ इंदवलिंग गुरु २ स्वा
हा ॥ ६९ श्रीं इंदवलिंग गुरु २ स्वाहा ॥ स ९ श्रीं घं
॥ श्रीं इंदवलिंग
गुरु २ स्वा
हा





23

५५

वरं

भो वं श्री

कुंजे शं॥ स्या

मारुका त्रिनेत्रा तनुर नामता मनसा नर्ज गामि
विबोस्थो चारुवका पृथुतरज घना मेखनार
न सो भो॥ देवादे वरुसो भेवर वर कुमुद
वरवो क्ये सभारे॥ शाने श्री कुयजिका
रव्या विनराये तस्सा जारा दिव्यो धर्मो धी॥
माया कुराडलाने कीया मधु मति काले कला
मालान॥ मान गिविजया जया नगवनि देवि शिवा

शां भो व॥ श

क्ति शं क

रु व

२४

छत्रा

त्रीनयेनी धा

ग्यादिनि भेरवी

ह्रिकारि त्रिपरा परा परमयि माना कुमारि न्येसि॥
पापो हं पाप कर्मा हं पापात्मां पाप संभव॥ न
हि मां देव देव्यो स सर्व पाप हरो भव॥ अने
नमस्सर्गनामि त्वमेव सराग मम॥ तस्या
न सर्वत्र कारुण्य भाषन रक्षरक्ष परमेश्वर
॥ धर्म पुजायाना योनि मुद्रा उडपतयाय॥ श्रीदे
वतर्पणा याय॥ श्रीगुरुतय यामिनम॥ श्रीपद्मगुरुत

र्पयामि नम॥ श्री

पद्मस्थीगु

रुत

पयामि

नमः श्री हरे

ॐ नमः श्री नवा

त्मागुरुनर्पयामिनमः श्री कर्माचार्यगुरुतर्पयामिनमः

श्री ३ भस्वईष्टदेवतादेव्यो नर्पयामिनमः श्री

देवदेव्यो नर्पयामिनमः विदुनमः श्री नाथ

वनमः श्री शिवाय नमः श्री कुजे नमः

धायनमः धकं वलि संतयः हन देवपुजा

यायगुमंत्रः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं येकाने पादुकां ॥ सिं स

पुजायाया ॥ ऐं ह्रीं श्रीं येकाने पादुकां ॥ सिं स चो गुना

किदको वलि स

कुट्टे ॥ मं

दया

२५

स्वीदे

गुलियासा

कोकया पात्रस

भुना मिषापिया सिरसं दुये ॥ बल गुं वरदान फेने

सिरस फया काये ॥ ओ वं ॥ कि ग क पा से चन

ननया वलि स हिं आचमने स्वाहा ३ कि

म अर्चन नं पुन आचमने स्वाहा ३

पात्रस चो गुं शु यिया वलि स चोय ॥ ई

अस्त्राय फुट् ३ ॥ मलाहिया देवनि से अनिया

यह दय मि संतय ॥ मं हार गुं का के ने ॥ लीं ३ ॥ २

त्रिं हीं ३ ॥

अस्त्राय

फुट्

धुकं
बलि धिया
सलाही संस्वां को

कया पुडा माई ननुना बलि सं होय माल जु जोः
॥ शित श्री ३ भू स्व इह देवता पुजा विधि
विमर्ज शु॥ नो मला काय॥ यामलिकाय
अर्घ्या जल बलि हाय॥ संघ या जल त्वने
॥ संघ जल न श्री सुर्य माई स्थान स धामेंद
नवाय॥ अर्घ्या विद्य अज अमन नित्य कर्म देवा
चरा पुजा सगुणा र्थ होई स श्री कुल मार्त द भोरव

श्रीसूर्याय अर्घ
नम॥ आवाह
नमः
२६

नचंद
नाधन पुष्य
नम॥ सै निर्मात्य

वासि सै नम॥ धुकं देव नने॥ बलि होये॥ पात्र मोला
होना ने बे जाई काय॥ तर्पणा वाष॥ श्रीगुरु तर्प
यापि नम॥ श्रीस प्रगुरु तर्पयापि नम॥ श्रीव
जैस्थिगुरु तर्पयापि नम॥ श्रीकर्मो चा
र्म देवो तर्पयापि नम॥ श्री हृदं॥ स६
श्री आनवात्मा गुरु मराडलाये तर्पयापि नम
॥ श्री ३ भू स्व इह देवता देव न्यो तर्प यापि नम॥ वि

हु नम श्री ना
थाय न
म

श्रीशि
दिनाथाय
नमः श्रीकृष्ण

धायनम् ॥ धर्म देव या त भक्ति मेघ ॥ वीलम भक्ति मेघ ॥
पार्जसं कल्पयुधस यो नो भो पुत्र भाव यय ॥
पानारादि जोगि मन्त्री यन्तु ॥ ॥ स्तुति हि
लोने अनियाय जे व स्रया सिर से र
य चंद सो धुर चरण मृत निवे स्यो को का
य निरपा मिया सिर से दुये ॥ चरण मृत ला
हानि स कया मरण याय ॥ श्री ३ अक्षर स्व इ ए देवता

देखे नो चरण
दक पित्वा
में में
३

दुःखः
निवारनम्
भनम भनम

दिने न धर्म फोडा वरुने ॥ धुलि धुस्यो लिहि कं
वह जोल सल्लो दता २ कया अनिधाना न
नुना बोये हि कं वह जोल सिला तय कि
ग जाकि स्वी मृत मुना व से न्या वादा
में दोय माल जुला ॥ सुभम् ॥ ॥

~~विषय मय या विषय मय या विषय मय~~ ॥ इति सु
दो असं द्वा पा में में दोय न दिवने ॥ संवत् १९६६
६ साल के वदि
ओज पसीर
आप





श्री
नीर्वोशोभ

राय पुजा कायगु

न सत्ता स्वपोलाकया न्याससमेत पायः आसनपुजा नि
रैनन प्रेतासनाय पादुका पुनयाभिनमः ॥ देपाला
हस्ति नीस्मानजोना ध्यान पायः ॥ बोने गु
निरैनन निभाकाला द्विभूजाकुलना
यिका ॥ एकवक्त्रा महादेवी त्रिनेत्रा चंद्रशे
खरा ॥ स्थूलरूपा प्रिया प्रोक्ता वरदा भवनाशिनः
॥ ध्यानयुष्मी पादुका नमः ॥ चिस्वां छाय पुनयाभिनमः
वक्त्रादिकोकीजस
पति दीय गु
तयमाल

सैंस

वात्मस्वेन

शैवाय सु सैंस

सैं पादुकां ३ पुजयामिनमः ॥ इदं धर्तुं गुरुस्वहा ॥

सैं सैं सैं सैं सैं सैं हस सु सैं सैं श्री माहात्म्य

शोभय नन्द नाथ ई श्री श्री साहिनाय सि

द्वाभ सर्वाधिकारे नवे सैं सैं पादुकां

३ पुजयामिनमः ॥ इदं धर्तुं ॥ सैं हस श्री

हि सैं पादुकां ३ पुजयामिनमः ॥ इदं धर्तुं ॥ सैं हस

पुर्णे सैं हि हि दक्षिणे सैं इ इ पश्चिमे सैं हे हे उ नरे

सैं हो हो नीपरे

सैं ह ह हा

हके

गंगा

आवाहन

याय मा ल गु

गंगा स नक्षत्रातो पुत्रा बोने गंगे च नमुने चैव गोदा

वरि सरस्वति ॥ नम दे सिन्धु कावेरि जल स्त्री नु

स निधि मुकुट ॥ १ ॥ गंगा ये नमः नमुना ये न

म गोदा वरि ये नमः सरस्वति नमः नर्मदाय

नमः सिन्धु कावेरि नमः आवाहन चै दत्ता क्षत्र

पुष्पं नमः धनु मुदा द स य नमः ॥ नर ला हात स ली य न

स्ततया बोने अज सोर मावेन फलाना गरास चौद्रमा

नेन फलानामे

हा फला

नाक्ष

फलाना
तिवाहनक्षेत्र
योग. जाम्बुदिपेत्र

रथवशदे यमुपति सनिधाने वागमन्यां पश्वाम् भागे विष्णु
मन्यां पुर्वभागे कोतिपरमाह्वनगरे असेतो न वासीत अ
स्वमन्त्र कविजात रत्न वसममं अस्मी नृगंगाज
ल्लभानमहं करिष्ये कलसमुद्रा अक्ष
धेनमुद्रा स्वक सौर सैखानः खानया यधन
काव धोति केरे याताः ॥ नर्पणा ॥ श्री ३ स्व ३ स्व देवता
नर्पणा मिमह स्वक ॥ पीत सात नर्पणा स्वक स्वक
याव विभुजा

नया सुजु
न

नाम
महामय
केशवैधकरोष

हं केशवैधया मिमहः आगममनेकः हसक्षमलव
लभं स्वाहा १० आचमणा ॥ श्री श्री वास
श्रीगुरुभ्यो नमः श्रियद्गुरुभ्यो नमः सर्वं
श्रियद्गुरुभ्यो नमः दधुं यर्चिषुय
का स्वालस्वचा उयके गुमंत्र ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं वसयचिं स्वकदाय मंत्र ह्रीं ह्रीं ह्रीं पाला
स नीयचो न दायक न फल प्राणादि याश ह्रीं ला
वचिनिं ह्रीं सोधि
येका धाये
गु

ॐ ३२

स्वालायची

अंगुष्ठीची नालासे

धियाधियेगुरं दृष्टं अंगुष्ठीची नालासे धियाधियेगुरं

दीपद करंगादिनास जवलाहाकवलाहादियेगुरं

हृदयायकनठ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ह्रीं

तर्जनीभ्यां नमः ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ह्रीं अ

नाभिकाभ्यां नमः ह्रीं कनिष्ठाभ्यां नमः ह्रीं करन

लघ्नीभ्यां नमः ह्रीं हृदयादिनास ह्रीं हृदयाय नमः

ह्रीं सिंसेनाहा ह्रीं सिखायवो कन ह्रीं कवचाय ह्रीं ह्रीं

मेत्रयायवो कन

ह्रीं अलाय

कन

ॐ ह्रीं

मुनिमुनि पा

डुकां ३ पु

नयामिनमः ॥ इदं वलिं ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

समाडुकां ३ पु नयामिनमः ॥ इदं वलिं ॥ गायेत्री

नारीनायविदमहनीराकाराय ॥ विमलि

तनोसुं च प्रबोद्ध्यात् ॥ १ ॥ पाडुकां ३ पु न

यामिनमः ॥ इदं वलिं ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

पाडुकां ३ पु नयामिनमः ॥ इदं वलिं ॥ गृह गृह गृह गृह

आवाहन चन्दनाक्षतपुष्पतमः पुष्पतमः योनि मुंडा

दसमस्तमः ॥ ॥

वोवीयेहा

वार्थे

दध्या
गुवोकेडम

॥ जप-हायायागु

धुनेवयायः धुनौ स्याहा ॥ १० ॥ स्तोत्रहायायागु धुनेवना
पंजोरयानोहंकावोने ॥ उकारशितानरवाले
चक्रं कारादिकक्षेत्रिगुह सर्वानं ॥ तारा
श्रियोर्वगगो धंशादेकुने श्वरुतं पु
शामामिनित्यं ॥ १५ ॥ वायोहंयायकमोहंया
यान्मां पापसंभव ॥ त्रहिमादेवदेवसि सर्वथा
यहोर्गुगु ॥ अनेत्रमरुगो नास्ति नमवसरुगोमम ॥ १९ ॥

इतिनिर्वाण
पुमाजु
न

ASHA ARCHIVES
२०४७



